दिनांक 28 अगस्त 2017 को प्रसिद्ध हास्य कवि पंडित ओम व्यास ओम के पुण्य स्मरण में छपी स्मारिका ''हास्यमेव जयते'' के विमोचन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. आज स्वर्गीय पंडित ओम व्यास ओम की पुण्य स्मृति में मां पर आधारित ''ताई से माई'' कार्यक्रम में आकर और उनकी पुण्य स्मृति में प्रकाशित स्मारिका ''हास्यमेव जयते'' के विमोचन के अवसर पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। महाकाल की अत्यन्त पवित्र नगरी उज्जैन में इसी मिट्टी से उपजे हास्य एवं व्यंग्य विधा के प्रख्यात कवि को श्रद्धांजलि देना एवं उनके साहित्यिक कृत्यों एवं रचनाओं को स्मरण करना हम सबके लिए गर्व का विषय है। इस अवसर पर यहां उपस्थित बुद्धिजीवियों, साहित्यिक हस्तियों के साथ–साथ साहित्य प्रेमियों का मेरी ओर से हार्दिक अभिनंदन है। **पंडित ओम व्यास जी की माता प्रेमलता व्यास जी इस अवसर पर मौजूद हैं, उनका वंदन करती हूं कि उन्हें ऐसे प्रतिभावान कवि की माता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।**

2. पंडित ओम व्यास जी एक बहुत प्रतिभावान कवि थे एवं उनकी कविता की सरल भाषा, गहरी संवेदना एवं कोमल भावनाएं बहुत ही स्वाभाविकता से हमारे हृदय को स्पर्श करती हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता ''मां'' में जो मां का वर्णन है वह बहुत ही मर्मस्पर्शी एवं सत्यता का परिचायक है। मूलतः, वे हास्य कवि थे परंतु उन्होंने बहुत ही संवेदनशीलता से 'मां' एवं 'पिता' नामक कविता की रचना की। मैं समझती हूं कि उनकी यह कविता बहुत ही मार्मिक, संवेदनशील एवं अंतर्तल से लिखी गई हैं एवं वे कालजयी कही जा सकती हैं।

3. माना जाता है कि साहित्य की सबसे कठिन विधा हास्य है और व्यंग्य तो और भी मुश्किल। भारत की भूमि में जहां हास्य और व्यंग्य के विविध रंग अनायास ही दिखते हैं और कई प्रख्यात कवि एवं लेखकों ने अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवाया है जिनमें

काका साहेब कालेलकर, काका हाथरसी, श्री शरद जोशी, अशोक चक्रधर, शैल चतुर्वेदी, बाल कवि बैरागी, अरूण जैमिनी, हुल्लड़ मुरादाबादी, सुरेन्द्र शर्मा, राहत इन्दौरी, कुंवर बेचैन, उदय प्रताप सिंह एवं सूर्य कुमार पाण्डेय इत्यादि का नाम बहुत ही प्रमुखता से लिया जाता है। उसी की कड़ी में पंडित ओम व्यास ओम का भी नाम आता है जिनके असामयिक निधन ने उनकी लेखनी से निःसृत होने वाली कविताओं से हमें महरूम कर दिया है। परंतु अल्प समय में ही उन्होंने जो उत्कृष्ट कविताएं लिखीं जो न केवल हमें हंसाती थीं, रूलाती थीं बल्कि हमें निरंतर यह सोचने पर मज़बूर करती थीं कि क्या सही है और क्या गलत।

4. काव्य मानव जीवन की अनुभूतियों एवं चित्तवृत्तियों का व्यक्त स्वरूप है। ये अनुभूतियां अपने युग की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं और इसका असर लगभग हर समकालीन कवि पर पड़ता है। परंतु कुछ भाव अमिट एवं अपरिवर्तनकारी होते हैं। उनकी कुछ कविताओं में उस प्रकार के भावों की भी अभिव्यक्ति हुई है जो शाश्वत, सत्य एवं सतत् हैं। मैं मानती हूं कि कविता कवि की सौन्दर्यानुभूति की अभिव्यक्ति होती है, उसकी व्यथा की भी अनुभूति है। वह निश्चय ही कवि की अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं को भी अभिव्यक्त करती है। पंडित ओम व्यास जी के सरल, सहज एवं सुगम शब्दों में जीवन का संदेश था, वह ओज था जो ईश्वरीय है। चूंकि अन्ततः हम सभी तो परमात्मा के अंश ही हैं। अतः, उनकी कृतियों में भी परमहंस के भाव का दर्शन होते हैं।

5. हमने जयशंकर प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर तथा नागार्जुन को खूब पढ़ा है। उनकी रचनाओं में साहित्य के विभिन्न विधाओं की झलक मिलती है एवं कई तो अमर एवं देश, काल एवं समय से परे हैं। माननीय अशोक चक्रधर जी यहां मौजूद हैं जिन्होंने हास्य एवं व्यंग्य में उत्कृष्ट रचनाएं लिखी हैं एवं न केवल

पाठकों का मनोरंजन किया है बल्कि समस्त समाज को हास्य की चाशनी में लपेटे परम सत्य के दर्शन कराए हैं एवं सोचने पर मज़बूर किया है कि सत्य क्या है।

6. यह हमारा सौभाग्य है कि हमें उन साहित्यकारों को स्मरण करने का अवसर मिला है जिन्होंने दशकों से भारतीय साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट परम्परा का न केवल संरक्षण एवं संवर्धन किया है बल्कि जनता की मूक आवाज़ को एक धार दी है। उन सभी के प्रति हम अपना आभार व्यक्त करते हैं।

6. पंडित ओम व्यास ओम नई पीढ़ी के उभरते कवि होने के साथ–साथ उत्कृष्ट प्रस्तुतकर्ता थे। उनके अंदाज़ से कवि सम्मेलन में रौनक आ जाती थी। ''मां'' कविता के इस अंश को मैं उद्धृत कर रही हूं:–

''मां, मां चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधों का नाम है।

मां, काशी है, काबा है और चारो धाम है।''

इसी प्रकार पिता के विषय में उन्होंने कहा कि:–

''पिता अपनी अच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है।

पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है।।''

7. उनकी कविताओं में रसीली, चुटीली, चुस्त एवं गुदगुदाहट से सराबोर होती थीं। उनकी पहचान रूद्राक्ष, तिलक, चोटी एवं चश्मा पहने एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में होती थी जो उन्हें सबके बीच लोकप्रिय बना देती है। उनके कविता पाठ की एक अनूठी शैली थी, जो दर्शकों को अत्यन्त पसंद आती थी। वे हास्य के माध्यम से जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को अत्यन्त सजीवता के साथ श्रोतागणों के समक्ष प्रस्तुत कर देते थे एवं अनायास ही श्रोतागण हंस कर लोट–पोट हो जाते थे। उनकी कविताओं का स्तर उच्च, शिष्ट, विनम्रतापूर्ण परंतु कटाक्ष लिए होता था।

8. ओम जी अल्पायु में ही हम सबको छोड़ कर चले गए। 25 जून 1961 में उज्जैन की पवित्र नगरी में जन्मे ओम जी 8 जून 2009 को विदिशा के बेतवा महोत्सव में आयोजित कवि सम्मेलन में कविता पाठ करके लौटते वक्त हुई कार दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गए और 8 जुलाई 2009 को उनका स्वर्गवास हो गया। उसी दुर्घटना में ओम व्यास ओम, नीरज पुरी एवं लाड़ सिंह गुर्जर की हुई मृत्यु ने हास्य व्यंग्य की दुनिया के तीन प्रमुख सितारे को सदा के लिए अस्त कर दिया। यह अत्यन्त दुःखद क्षण था और साहित्य प्रेमियों के अंतर्मन पर उनका इस तरह चला जाना असहनीय आघात था।

9. ओम जी ने देश–विदेश के हजारों मंचों से कविता पाठ कर दर्शकों का सिर्फ अपनी कविता से मनोरंजन ही नहीं किया बल्कि जीवन के अनमोल संदेश भी दिए। उनकी दो कविताओं ने व्यक्तिगत रूप में मुझे बहुत प्रभावित किया है। मेरा मानना है कि यदि व्यक्ति मातृ अथवा पितृभक्त है और माता–पिता के प्रेम को सही मायनों में समझता है तो स्वाभाविक है कि वह ज्यादा आध्यात्मिक होगा एवं वह मानवीय रिश्तों को ज्यादा समझेगा एवं आदर करेगा।

10. श्रोता उन्हें चोटी वाला कवि कहते थे। उनकी काव्य रचना के केन्द्र में मनुष्य के प्राकृतिक स्वभाव मुस्कान होती थी। वे कहते भी थे कि मनुष्य के अलावा शायद ही कोई ऐसा प्राणी है जो हंस सकता है, तो क्यों न खुलकर हंसा जाए। वे कहते थे कि इंसान ही ऐसा है जो मुस्कुराता है, कभी किसी जानवर को मुस्कुराते नहीं देखा। मुस्कुराहट एवं प्रसन्नता, यही मनुष्य का ध्येय है। हम सब जो कुछ भी करते हैं उसक अंतिम ध्येय या तो स्वयं को प्रसन्न रखना है अथवा किसी दूसरे को प्रसन्न करना है। अपने लिए तो भी प्रयत्न करते हैं लेकिन जो दूसरों के लिए प्रयास करता है वह किसी किसी से ही हो पाता है। हास्य कवि होने के लिए कुशाग्रबुद्धि एवं हाज़िरजवाब होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए ओम व्यास जी में यह सब गुण थे और इसलिए वे सर्वप्रिय थे।

11. आज इस कार्यक्रम के माध्यम से मैं यह संदेश देना चाहूंगी कि मातृशक्ति प्रकृति की श्रेष्ठतम कड़ी है। महिलाओं में जो शिक्षित होकर आगे आ रही हैं, उनकी यह जिम्मेदारी है कि वह स्वावलम्बन की इस कड़ी को टूटने न दे। वह बेटियों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें आगे बढ़ाए, उनका बचपन निश्चिन्त हो, उनका भविष्य अच्छा हो, ऐसा प्रयास हम सब करें। ओम व्यास जी की ''मां'' कविता तभी चरितार्थ होगी जब हरेक स्त्री अपने लिए कर्त्तव्य करने के साथ–साथ समाज के लिए भी कर्त्तव्य करें। तभी आदर्श मां का चरित्र–चित्रण प्रासंगिक सिद्ध होगा।

12. पंडित ओम व्यास जी ने उन आदर्शों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है जो सत्य, सनातन और शाश्वत हैं। अतः, उनकी कविताओं से समाज को सीख लेने की आवश्यकता है। **प्रख्यात साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द जी ने लिखा है जिसे मैं उद्धृत करती हूं:–'' जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममे संकल्प और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने की अधिकारी नहीं है।''**

13. ''हास्यमेव जयते'' के विमोचन के इस अवसर पर मैं एक बार पुनः पंडित ओम व्यास जी को श्रद्धांजलि (हास्यांजलि) देते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देती हूं।

धन्यवाद।